Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain college, Ara.

Notes For - B.A-part-III, paper-V

Topic - सल्तनत कालीन वास्तुकला :- दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ देश की सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया, जब तुर्क भारत आए थे। उनका न सिर्फ इस्लाम में गहरा विश्वास था, अपितु सरकार, कला तथा वास्तुकला के बारे में भी उनके विचार काफी स्पष्ट थे। भारतीयों के साथ मिलने-जुलने से उनके गहरे, धार्मिक विश्वास, कला, वास्तुकला तथा विकसित साहित्य से नई तुर्की परम्परा का विकास हुआ। पर यह प्रक्रिया काफी लम्बी थी तथा अनेक उतार-चढ़ाव वाली थी।

वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ :- (1)

(1.) मेहराब तथा गुम्बद :- इनके प्रयोग के अनेक लाभ थे। गुम्बद से भवन देखने में सुंदर लगता था। मेहराब तथा गुम्बद प्रणाली के प्रयोग से/ उपयोग से छत को सहारा देने के लिए बड़ी संख्या में खंभों की आवश्यकता नहीं रही तथा साफ-सुथरे बड़े कमरों का निर्माण संभव हो पाया। इस तरह के कमरे मस्जिद तथा महलों में काफी उपयोगी थे।

(2.) अच्छे सीमेंट का उपयोग :- मेहराब तथा गुम्बद के निर्माण के लिए अच्छे सीमेंट की आवश्यकता थी, अन्यथा पत्थरों को अपनी जगह पर स्थिर नहीं रखा जा सकता था। तुर्कों ने चुना तथा सीमेंट के अच्छे मिश्रण का प्रयोग अपने भवनों में किया।

→

(3.) शिलापट्ट तथा वल्ली प्रणाली:- भारत में प्रयोग में आनेवाली प्रणाली में एक पत्थर के ऊपर दूसरे पत्थर को रख उसे दूरी को धीरे-धीरे कम किया जाता था, तथा इस तरह जगह को पूरी तरह भर दिया जाता था। अंतिम पत्थर के खाल वल्ली द्वारा स्थिरता प्रदान की जाती थी और इसी कारण इसे शिलापट्ट एवं वल्ली प्रणाली कहते थे।

(4.) अलंकरण:- तुर्कों ने आदमी तथा जन्तुओं की आकृति का प्रयोग भवनों में नहीं किया। इसके स्थान पर उन्होंने ज्यामितिक आकृति तथा फूलों द्वारा एवं इसके साथ-साथ कुरान की आयतों द्वारा सजावट की। इस तरह अरबी भाषा खुद सजावट के तरीकों का मिला-जुला रूप "अरबेस्क्यु" कहलाया। उन्होंने ज्यामितिक आकृति तथा फूलों द्वारा एवं इसके साथ-साथ कुरान की आयतों द्वारा सजावट की। इस तरह अरबी भाषा खुद सजावट का जरिया बन गई। उन्होंने हिन्दू चीजों जैसे बेल-लताएं, कमल इत्यादि का भी प्रयोग किया। पत्थर काटने वाले भारतीय मजदूरों के कौशल का काफी प्रयोग हुआ। उन्होंने लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर के प्रयोग द्वारा अपने भवनों को रंगीन बनाया।